सिरमौर जिले के हाटी समुदाय की लोक-संस्कृति व लोक-संगीत का अध्ययन – वर्तमान संदर्भ में

Monika Kumari
Assistant Professor, Music -Instrumental
&
Ph. D Research Scholar,
Eternal University, Baru Sahib,HP

सारांश: जिला सिरमौर हिमाचल प्रदेश का एक महत्वपूर्ण जिला है। गिरी नदी सिरमौर में ५५ मील बहते हुए इस जिले को दो आसमान भागों में बांटती है, जिन्हें गिरी-पार क्षेत्र व गिरी-आर क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। गिरी-आर क्षेत्र में जहां मिश्रित संस्कृति के लोग निवास करते हैं वहीं आधुनिकता की फुहड़ता से अछूता गिरी-पार क्षेत्र एक पहाड़ी क्षेत्र है जहां निवास करता है प्रसिद्ध 'हाटी समुदाय'। हाटी समुदाय अपनी जनजातीय विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है। वर्तमान में इस समुदाय के निवासियों द्वारा जनजातीय क्षेत्र का दर्जा पाने के लिए किया गया संघर्ष देशभर में चर्चा का विषय रहा । यहां के निवासी प्राचीन काल से ही पूर्वजों की आदिम परम्पराओं का वहन व संरक्षण करते आ रहे हैं। भौगोलिक दुर्गमता एवं आर्थिक रूप से पिछड़ा क्षेत्र होने के बावजूद भी गिरीपार का हाटी क्षेत्र सांस्कृतिक व सांगीतिक दृष्टि से अत्यधिक समृद्ध है। इस क्षेत्र का संगीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी निरन्तर आगे बढ़ रहा है यहां के पारम्परिक लोक-गीत पीढ़ियों को लांघकर वर्तमान में भी ज्यों के त्यों गाये बजाए जाते हैं। पारम्परिक लोक गीतों के साथ संगत में पारम्परिक लोक वाद्यों हुडक, ढोल, नगाड़ा, दमानू का वादन किया जाता है। हाटी क्षेत्र के प्रचलित पारम्परिक गीत यहां के लोगों की रगों में बसे हुए हैं। यहां का मुजरा, ढीली नाटी, हारुल,परात व दीपक नृत्य देशभर में प्रसिद्ध है।

Keywords: हाटी, लोक-गीत, पारम्परिक, हाटी समुदाय

1. परिचय:

हिमालय की गोद में बसा राज्य हिमाचल प्रदेश 12 जिलों में विभाजित है। यह प्रदेश न केवल भारतवर्ष में अपितु पूरे विश्व में अपनी समृद्ध पारम्परिक लोक सस्कृति के लिए ख्याति प्राप्त है। 25 जनवरी 1971 को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त करने वाला यह राज्य वर्तमान में पूरे भारतवर्ष में पर्यटन, पनबिजली तथा फल प्रदेश के रूप में विख्यात है। हिमाचल प्रदेश के 12 जिलों में से एक जिला सिरमौर जहां अपने भौगोलिक व सांस्कृतिक आधार पर समृद्ध है, वहीं आर्थिक रूप में भी अपना विशेष स्थान रखता है। साथ ही इसकी राजनैतिक चेतना दीर्घकाल से जनमानस को आंदोलित करती आ रही है। सिरमौर हिमाचल प्रदेश का एक महत्वपूर्ण जिला है। प्राचीन काल में यह यमुना और सतलुज के मध्य फैले भू-भाग पर 1141 वर्ग मील की एक बड़ी रियासत भी सिरमौर जिले का मुख्यालय नाहन है। यहां के प्रमुख रमणीय धार्मिक स्थल चूडधार की चोटी, मी भंगाइणी मन्दिर पांवटा साहिब का गुरुद्वारा आदि इस क्षेत्र में आने वाले सैलानियों का मन मोह लेते है। यह क्षेत्र आलू, लहसुन तथा अदरक की खेती के लिए प्रसिद्ध है। इसका क्षेत्रफल लगभग 2825 वर्ग है। जिला सिरमौर में यमुना, तौस व गिरी नदी बहती है। गिरी नदी जिला सिरमौर की प्रमुख नदी है। यह सिरमौर जिले में 55 मील बहते हुए इस जिले को बराबर दो भागों में बाटती है- गिरीआर क्षेत्र तथा गिरीपार । नाहन में जब राजधानी गई तो राजस्व की वृद्धि के लिए गिरीआर क्षेत्र मैं बसने का पटियाला, जालन्धर व होशियारपुर के ग्रामीण लोगों का सफल प्रयत्न रहा। इसीलिए आज भी इस भाग में विभिन्न समुदाय व मत्तों के लोग बसते है,

जिनकी अलग भाषाएं, परम्पराएं है। किन्तु गिरिपार क्षेत्र पूरी तरह पहाड़ी क्षेत्र है तथा सिरमौर का हाटी समुदाय गिरिपार क्षेत्र में निवास करता है। अनुसूचित जनजाति का दर्जा हासिल करने से अभी भी वंचित हिमाचल प्रदेश के जिला सिरमौर के गिरिपार क्षेत्र में बसे इस कबीले को प्राचीन काल से ही हाटी नाम से जाना जाता है।

2. हाटी क्षेत्र का सक्षिप्त परिचय

2.1 शाब्दिक अर्थ

'हाटी' शब्द गिरिपार क्षेत्र के निवासियों की बिक्री और खरीद पर केंद्रित अनुठी परम्परा में निहित है जोकि 'हाट' शब्द से निकला है । हाटी समुदाय के लोग बाजार को स्थानीय भाषा में 'हाट' कहकर बुलाते थे। प्राचीन समय में गिरिपार क्षेत्र के लोग समूह के रूप में आवश्यक वस्तुओं की खरीद करने के लिए वर्ष में एक या दो बार समीपवर्ती बाजार (जोकि मैदानों में स्थित थे) में जाते थे । व्यापारी लोग इन्हें किसी स्थान या जाति के नाम से सम्बंधित न करके 'हाटी' के नाम से सम्बोधित करते थे । 'हाट' शब्द का वर्णन श्री दुलाराम चौहान द्वारा लिखी पुस्तक "शिर्गुल महिमा" में भी मिलता है। श्री शिरगुल महाराज और उनके भ्राता चन्द्रेश्वर महाराज सरकार के आदेश पर दिल्ली जाने के लिए अपनी तैयारी कर ही चुके थे कि प्रजा के 30-40 आदमी उनके साथ 'हाट' (दुकान से सामान लेने हेतु) के लिए तैयार हो गए।

2.2 भौगोलिक पृष्ठभूमि

हाटी समुदाय सिरमौर जिला के पहाड़ी गिरीपार क्षेत्र में बसा है। वर्तमान में जिला सिरमौर की पांच तहसीले शिलाई, संगड़ाह कमराऊ, राजगढ़, नौहराधार और उप-तहसीले हरिपुरधार, रोहनाट तथा पांवटा साहिब की कुछ पंचायतों में हाटी समुदाय के लोग वास कर रहे है। इस क्षेत्र के निवासी अपनी समृद्ध परम्पराओं को विकसित करने में अपनी विशेष भूमिका निभाते रहे हैं। यही कारण है कि यहां के निवासियों के साथ-साथ भारत सरकार भी इस क्षेत्र की संस्कृति को संजोए रखने तथा इस क्षेत्र के विकास के लिए इसे अनुसूचित जनजाति क्षेत्र के दायरे में लाने का विचार कर रही है।

2.3 हाटी संस्कृति

हाटी क्षेत्र के लोग परिश्रमी तथा भोले है जो मुख्यतः लकड़ी पत्थरों तथा गोबर-मिट्टी के गारे से बने पारम्पारिक घरों में रहते हैं। वर्तमान में यातायात की सुविधा होने के पश्चात इस क्षेत्र में रेत-सीमेंट से बने मकानों का प्रचलन जोरों पर है। इस क्षेत्र के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है । हाटी क्षेत्र की प्रमुख फसलें गेहू, मक्की, जौ, धान, अदरक, लहसून, मटर, टमाटर आलू इत्यादि हैं। कृषि के साथ-साथ यहां के लोग पशु-पालन की ओर भी रुझान रखते हैं । घी-दूध की इस क्षेत्र में कोई कमी नहीं है। इस क्षेत्र के लोगों ने संयुक्त परिवार, हला (सहकारिता) आदि ऐसी प्रथायें आज भी विद्यमान हैं, जिनसे सहयोग की भावना को निरन्तर बढ़ावा मिलता रहता है । हाटी क्षेत्र के निवासियों की वेशभूषा अन्य क्षेत्र की वेशभूषा से बिल्कुल अलग है। यहां की औरते सिर पर ढाटू (रूमाल के जैसा कपड़ा) बांधती है। सादे सूट-सलवार के ऊपर सदरी (बिना बाजू के कोट जैसा पहनती हैं । पुरुषों में 'लोइया' का प्रचलन हैं। सिरमौर जिले के प्रसिद्ध 'ठोड़ा नृत्य' के दौरान इसे पहनना अनिवार्य माना जाता हैं। हाटी समुदाय के लोगों का खानपान यहां की जलवायु के अनुकूल रहता है। आमतौर पर लोग मक्की व गेंहू रोटी, हरी सब्जी तथा साथ में दही-लस्सी के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। इसके अलावा तीज-त्योहारों पर असकली, आटा-घी, गुल्टी (मांस). खीर-पटान्डे, धरोटी-भात सीडकू, खोबले, शुचावले लूशके, बिलोई (कंचन), सतू धिन्दडे इत्यादि बनाऐ जाते हैं। हाटी क्षेत्र के लोगो में धार्मिक रीति-रिवाज तथा मान्यताएं कूट-कूट कर भरी हैं। आज भी वहां पर आदिम परम्पराओं के अंश विद्यमान है। प्रत्येक

गांव में कम-से-कम एक मन्दिर तो अवश्य बनाया गया है जिसे देवालय' या 'देवटी' कहा जाता है। लोगों के जीवन के प्रत्येक पहलु के साथ धार्मिक भावनाएं जुड़ी रहती हैं। कई बीमारियों का इलाज मन्त्रों व जादू-टोनों द्वारा करवाना, प्रेत आत्माओं को दूर भगाने के लिए पूजा करना, मशान जगाना इत्यादि प्रक्रियाऐं इस बात की गवाह है कि आज भी इस क्षेत्र के लोग देवी-देवताओं में पूरी तरह निष्ठा रखते हैं। इस क्षेत्र में बने मन्दिर धार्मिकता के साथ-साथ पर्यटन स्थलियों के रूप में भी अपना महत्व रखते हैं।

2.4 हाटी समुदाय का लोक संगीत

भौगोलिक दुर्गमता एवं आर्थिक रूप से पिछड़ा क्षेत्र होने के बावजूद भी गिरीपार का हाटी क्षेत्र सांस्कृतिक व सांगीतिक दृष्टि से अत्यधिक समृद्ध है। इस क्षेत्र का संगीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी निरन्तर आगे बढ़ रहा है यहां के पारम्परिक लोक गीत पीढ़ियों को लांघकर वर्तमान में भी ज्यों के त्यों गाये बजाए जाते हैं। पारम्परिक लोक गीतों के साथ संगत में पारम्परिक लोक वाद्यों हुडक, ढोल, नगाड़ा, दमानू ढोलक का वादन किया जाता है। हाटी क्षेत्र के प्रचलित पारम्परिक गीत यहां के लोगों की रगों में बसे हुए हैं। यहां का मुजरा, ढीली नाटी, हारुल, परात व दीपक नृत्य देशभर में प्रसिद्ध है। प्राचीन समय में गाए जाने वाले गीत आज भी ज्यों के त्यो गाए बजाए जाते है उदाहरण के लिए परम्परागत मुजरा गीत 'दासिया' आज भी उसी शुद्धता के साथ गाया जाता है जैसे प्राचीन समय में गाया जाता था । इस गीत के बोल इस प्रकार हैं-

मोरू दी ताजी दासिया बानों दी धुरी घुघती

जुए री बाजी दासिया, गांव दी लागी मानलों ।

जुए री बाजी दासिया, चारों शो चार रूपिया

घीयों रा टीनों दासिया चार शो हारा रूपिया है।

भावार्थ: प्रस्तुत नाटी में दासिया नामक व्यक्ति ने जुए में अपना सब कुछ खो देता है तथा अन्त में इस बुरी लत के कारण अपनी जान भी गवां बैठता है।

इस गीत में ठेठ सिरमौरी बोली के शब्दों का प्रयोग किया गया है।

2.5 वर्तमान में हाटी क्षेत्र के लोक-गीतों की स्थिति

लोक-गीतों के साथ ढोल, हुड्डक, ढोलक, दमानु के साथ तबला, ऑक्टोपैड, कैसियो और गिटार का प्रयोग किया जाता है। जहां पारम्परिक लोक गीतों में स्वर, लय तथा भाषा शैली की शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता है वहीं कुछ नवर्निमित गीतों में हिन्दी व पंजाबी भाषा का इस्तेमाल देखने के मिलता है। विवाह अवसर पर शांत-गीत, सेहरा गीत, बटना व तेलवान के गीत धाम के समय शीठने गीत आदि के अलावा जहां प्रत्येक रस्म पर कोई न कोई गीत गाया जाता था, वहीं आज इनमें से कुछ नाममात्र गीत ही सुनाई पड़ते है। विवाह तथा अन्य शुभ अवसरों पर जहाँ पडुऐ के गीत जैसे कुछ संस्कार गीत आज भी सुनाई पड़ते है तो वहीं डीजे पर आधुनिक समय के गानों पर भी लोग खूब थिरकते है।

इसके अलावा भी इस क्षेत्र के लोक संगीत में कई बदलाव हुए है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि आधुनिकता की दौड़ में पारम्परिक लोकवाद्य एवं लोक-गीतों का समय रहते संरक्षण व संग्रहण नहीं किया गया तो यह अपना परम्परागत रूप खो देगें।

संदर्भ ग्रंथ सूची (Bibliography)

- शर्मा, डॉ० रूप, सिरमौर दर्पण, हिमाचल कला, संस्कृति एवं भाषा विभाग 1991
- बक्शी पवन, हिमाचल गिरिपार का हाटी समुदाय, प्रकाशक एवं मुद्रक प्रिन्ट हाउस, 5 तेज बहादूर मार्ग, लखनऊ 226001, 2011
- चौहान, दुलाराम, शिर्गुल महिमा, विद्या प्रकाशक सनोहत, पत्रालय-शाया छबरोन वह-राजगढ 173101, जनपद सिरमौर (हि०प्र०)
- साक्षत्कार, श्री हरिचन्द चौहान, पुत्र-नैत्र सिंह, गाव, पो० औ० तहसील- सगड़ाह जिला सिरमौर,(हि०प्र०)

INTERNATIONAL JOURNAL FOR ENGINEERING RESEARCH TECHNIX
TIJER
OPEN ACCESS JOURNAL